# पासणाहचरिउ (फोल्डर नं. ००१४४४)

मुख्य टाइटल

ग्रन्थानुक्रमः


Foreword ----------1-2
संकेतसूची----------३
पासनाहचरिउ की विस्तृत विषय सूची----------४-१३
शुद्धिपत्र---------- १४
प्रस्तावना ----------१७-१२४
प्रतिओं का परिचय---------- १७
सम्पादन पद्धति ---------- १९
कवि का परिचय ---------- २०
कालनिर्णय ---------- २१
पार्श्वनाथ और उनके पूर्वभव---------- २५
पूर्व जन्मकी कथाओं का उद्गम और विकास ---------- २६
पार्श्वनाथ के पूर्वभवों का तुलनात्मक अध्ययन---------- ३०
कमठ के पुनर्जन्म ---------- ३२
विभिन्न ग्रन्थों में प्राप्त पार्श्वनाथ के पूर्व जन्मों का तुलनात्मक विवरण---------- ३३
पार्श्वनाथ के तीर्थंकर भव का तुलनात्मक अध्ययन ---------- ३७
माता, पिता, वंश और जन्मस्थान---------- ३७
पार्श्व और रविकीर्ति---------- ३८
पार्श्वनाथ का वैराग्य तथा दीक्षा---------- ३९
पार्श्व के उपसर्ग ---------- ४०
केवलज्ञान की प्राप्ति ---------- ४०
पार्श्वनाथ का संघ---------- ४१
पार्श्वनाथ का उपदेश---------- ४१
पार्श्वनाथ का निर्वाण ---------- ४२
पार्श्वनाथ के तीर्थ की अवधि ---------- ४२
पार्श्वनाथ एक ऐतिहासिक व्यक्ति ---------- ४२
पार्श्वनाथ के उपदेश का यथार्थ स्वरूप---------- ४४
पार्श्व के पूर्व भारत में धार्मिक स्थिति ---------- ४४
बौद्ध ग्रन्थ और चातुर्याम धर्म ---------- ४९
प्रतिक्रमण का उपदेश---------- ५१
पासणाहचरिउ में धार्मिक चिंतन ---------- ५४
जैनेतर मतों का उल्लेख---------- ५४
जैनधर्म का विवेचन---------- ५४


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व का स्वरूप ---------- ५४
श्रावक धर्म ---------- ५६
अणुव्रत ---------- ५६
गुणव्रत ---------- ५७
शिक्षाव्रत ---------- ५७
मुनिधर्म ---------- ५८
कर्मसिद्धान्त ---------- ६०
विश्व के स्वरूप का वर्णन ---------- ६०
सामाजिक रूपरेखा ---------- ६१
पासणाहचरिउ की शब्दावलि ---------- ६३
पासणाहचरिउ में काव्यगुण ---------- ७०
पासणाहचरिउ एक महाकाव्य ---------- ७०
पासणाहचरिउ में प्रकृति वर्णन ---------- ७१
स्त्रीपुरुष वर्णन ---------- ७२
युद्धवर्णन ---------- ७३
रस तथा अलंकार ---------- ७४
पासणाहचरिउ के छन्द ---------- ७५
कडवक का आदिभाग ---------- ७६
कडवक का मध्यभाग ---------- ७९
कडवक का अन्त्यभाग ---------- ८७
मात्रावृत्त ---------- ८७
पादान्त लघु गुरु का विचार ---------- ८८
चतुष्पदी घत्ते ---------- ९०
षट्पदी घत्ते ---------- ९५
पासणाहचरिउ की व्याकरण ---------- ९९
शब्दों की वर्तनी ---------- ९९
वर्तनी संबंधी अन्य परिवर्तन ---------- १०२
संधि ---------- १०६
लिंगविचार ---------- १०७
प्रत्यय ---------- १०८
कारकविचार ---------- १०९
क्रियाविचार ---------- १२०
अव्यय ---------- १२४
पासणाहचरिउ (मूल) ---------- १-१७२
संधि १

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडवक १ मंगलचारण-चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति----------१
कडवक २ कवि की विनयोक्ति----------१
कडवक ३ काव्य लिखने की प्रेरणा----------२
कडवक ४ खलनिन्दा----------२
कडवक ५ मगधदेश का वर्णन----------३
कडवक ६ पोदनपुर का वर्णन----------३
कडवक ७ राजभवन का वर्णन----------४
कडवक ८ राजा अरविन्द का वर्णन----------४
कडवक ९ राजमहिषी का वर्णन----------५
कडवक १० राजपुरोहित और उसका कुटुम्ब----------५
कडवक ११ मरुभूति को पुरोहितपद की प्राप्ति तथा उसका विदेश-गमन----------६
कडवक १२ मरुभूति की पत्नी और कमठ की विषय लम्पटता----------६
कडवक १३ मरुभूति का विदेश से आगमन----------७
कडवक १४ कमठ की पत्नी द्वारा रहस्योद्घाटन----------७
कडवक १५ मरुभूति का कमठ की पत्नी के कथन पर अविश्वास----------८
कडवक १६ कमठ की पत्नी द्वारा अपने कथनका समर्थन----------८
कडवक १७ मरुभूति द्वारा कमठ के पापाचारका अवलोकन...----------९
कडवक १८ कमठ का देश-निर्वासन----------९
कडवक १९ मरुभूति को कमठ का स्मरण...---------- १०
कडवक २० राजा का मरुभूति को उपदेश---------- १०
कडवक २१ मरुभूति द्वारा कमठ की खोज---------- ११
कडवक २२ कमठ द्वारा मरुभूति की हत्या...---------- ११
कडवक २३ गज की स्वच्छन्द क्रीड़ा---------- १२
संधि २
कडवक १ अरविन्द का सुखमय जीवन---------- १३
कडवक २ अरविन्द द्वारा दीक्षाग्रहण का निश्चय---------- १३
कडवक ३ अरविन्द के निश्चय की प्रजाको सूचना---------- १४
कडवक ४ अरविन्द द्वारा क्षमा याचना---------- १४
कडवक ५ अरविन्द को मंत्रियों का उपदेश---------- १५
कडवक ६ अरविन्द की अपने निश्चयमें दृढता---------- १५
कडवक ७ गृहस्थाश्रम की निन्दा, दीक्षा की सराहना---------- १६
कडवक ८ अरविन्द का जीव की अमरता पर विश्वास---------- १६
कडवक ९ अरविन्द को दीक्षा ग्रहण करने से रोकने का प्रयत्न---------- १७
कडवक १० अरविन्द का स्वजनों से अपने पुत्र को शिक्षा देने का अनुरोध---------- १७
कडवक ११ अरविन्द को अवधिज्ञान की उत्पत्ति....---------- १८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडवक १२ तिर्यंचगति में कष्टों का वर्णन ---------- १८
कडवक १३ मनुष्यगति के कष्टों का वर्णन ---------- १९
कडवक १४ देवगति के कष्टों का वर्णन ---------- १९
कडवक १५ राजा अरविन्द का निष्क्रमण---------- २०
कडवक १६ राजा अरविन्द द्वारा दीक्षाग्रहण---------- २०
संधि ३
कडवक १ अरविंद मुनि की तपश्चर्या का वर्णन---------- २१
कडवक २ वन में एक सार्थ का आगमन---------- २१
कडवक ३ सार्थपति की अरविंद से भेट, उसका धर्मोपदेश के लिये निवेदन---------- २२
कडवक ४ सम्यक्त्व पर प्रकाश---------- २२
कडवक ५ सम्यक्त्व के दोष और उनका दुष्परिणाम ---------- २३
कडवक ६ सम्यक्त्व की प्रसंसा---------- २३
कडवक ७ सम्यक्त्वधारी की प्रसंसा---------- २४
कडवक ८ हिंसा आदि का दुष्फल ---------- २४
कडवक ९ अणुव्रतों का निरूपण ---------- २५
कडवक १० गुणव्रतों का निरूपण---------- २५
कडवक ११ शिक्षाव्रतों का निरूपण ---------- २६
कडवक १२ जिनवर भक्ति की प्रशंसा---------- २६
कडवक १३ सार्थपति द्वारा श्रावक धर्मका अंगीकार ---------- २७
कडवक १४ गज का सार्थ पर आक्रमण---------- २७
कडवक १५ मुनिद्वारा गज का प्रतिबोधन ---------- २८
कडवक १६ मुनि को मुक्ति की प्राप्ति---------- २८
संधि ४
कडवक १ गज की तपश्चर्या का वर्णन---------- २९
कडवक २ गज का आत्मचिंतन---------- २९
कडवक ३ सर्पदंश से गज की मृत्यु... ---------- ३०
कडवक ४ राजा हेमप्रभ का वर्णन---------- ३०
कडवक ५ राजकुमार विद्युद्वेग का वर्णन ---------- ३१
कडवक ६ विद्युद्वेग द्वारा किरणवेग को राज्य समर्पण---------- ३१
कडवक ७ किरणवेग की वैराग्य भावना...---------- ३२
कडवक ८ महाव्रतों पर प्रकाश....---------- ३२
कडवक ९ मि का उपदेश....---------- ३३
कडवक १० किरणवेग की तपश्चर्या का वर्णन---------- ३३
कडवक ११ अजगर द्वारा किरणवेग की मृत्यु...---------- ३४
कडवक १२ अजगर की दावाग्नि में मृत्यु...---------- ३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संधि ५

कडवक १ राजा वज्रवीर्य का वर्णन---------- ३५
कडवक २ राजमहिषी लक्ष्मीमती का वर्णन---------- ३५
कडवक ३ राजकुमार चक्रायुध का जन्म---------- ३६
कडवक ४ चक्रायुध की गुणशीलता---------- ३६
कडवक ५ चक्रायुध के सिरमें सफेद बाल... ---------- ३७
कडवक ६ चक्रायुध का अपने पुत्र को उपदेश---------- ३७
कडवक ७ चक्रायुध द्वारा दीक्षाग्रहण---------- ३८
कडवक ८ चक्रायुध की ज्वलनगिरी पर तपश्चर्या---------- ३८
कडवक ९ अजगर के जीव की ऊसी पर्वत पर भील के रूप में उत्पत्ति---------- ३९
कडवक १० भील द्वारा चक्रायुध पर बाणप्रहार---------- ३९
कडवक ११ चक्रायुध की मृत्यु तथा स्वर्गप्राप्ति... ---------- ४०
कडवक १२ नरक की यातनाओं का वर्णन---------- ४०

संधि ६

कडवक १ राजा वज्रबाहू और उसकी रानी का वर्णन---------- ४१
कडवक २ चक्रायुध का राजकुमार कनकप्रभ के रूपमें जन्म... ---------- ४१
कडवक ३ कनकप्रभ की समृद्धि का वर्णन---------- ४२
कडवक ४ कनकप्रभ का विजय के लिए प्रस्थान...---------- ४२
कडवक ५ उसका दिग्विजय के पश्चात् अपने नगर में आगमन ---------- ४३
कडवक ६ कनकप्रभ द्वारा अधिकारियों की नियुक्ति---------- ४४
कडवक ७ नौकर चाकरों की नियुक्ति---------- ४४
कडवक ८ कनकप्रभ के ऐश्वर्य का वर्णन ---------- ४५
कडवक ९ कनकप्रभ की विलासवती स्त्रियों का वर्णन---------- ४५
कडवक १० ग्रीष्म काल का वर्णन---------- ४६
कडवक ११ जलक्रीड़ा का वर्णन---------- ४७
कडवक १२ वर्षा काल का वर्णन---------- ४७
कडवक १३ शिशिर काल का वर्णन---------- ४८
कडवक १४ कनकप्रभ की यशोधर मुनि द्वारा केवलज्ञान प्राप्ति की सूचना ---------- ४९
कडवक १५ कनकप्रभ का मुनि के पास आगमन... ---------- ४९
कडवक १६ उत्तर प्रकृतियों का निरूपण---------- ५०
कडवक १७ कनकप्रभ द्वारा अपने पुत्र को राज्य-समर्पण---------- ५०
कडवक १८ कनकप्रभ द्वारा दीक्षाग्रहण ---------- ५१

संधि ७

कडवक १ दीक्षा की प्रशंसा---------- ५२
कडवक २ कनकप्रभ द्वारा बारह श्रीतांगी का अध्ययन ---------- ५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडवक ३ कनकप्रभ द्वारा चौदह पूर्वांगो का अध्ययय---- ५३
कडवक ४ नचदौह पूर्वांगो में वस्तुओं की संख्या ---- ५३
कडवक ५ कनकप्रभ की तपश्चर्या---- ५४
कडवक ६ कनकप्रभ द्वारा मुनिधर्म का पालन---- ५४
कडवक ७ कनकप्रभ को ऋद्धियों की प्राप्ति ---- ५५
कडवक ८ कनकप्रभ का सरिवन में प्रवेश---- ५५
कडवक ९ सरिवन में स्थित पर्वत का वर्णन---- ५६
कडवक १० कनकप्रभ पर सिंह का आक्रमण---- ५६
कडवक ११ कनकप्रभ की मृत्यु तथा स्वर्ग प्राप्ति---- ५७
कडवक १२ अनेक योनियों में उत्पन्न होने के पश्चात् कमठ का ब्राह्मण कुल में जन्म---- ५७
कडवक १३ कमठ द्वारा तापसों के आश्रम में प्रवेश---- ५८

संधि ८

कडवक १ राजा हयसेन का वर्णन---- ५९
कडवक २ वामादेवी का वर्णन---- ५९
कडवक ३ तीर्थंकर के गर्भ में आने की इन्द्र को सूचना---- ६०
कडवक ४ इन्द्र की आज्ञा से कुबेर द्वारा वाराणसी में रत्नवृष्टि... ---- ६०
कडवक ५ देवियों द्वारा किये गये कार्य ---- ६१
कडवक ६ वामादेवी के सोलह स्वप्न---- ६१
कडवक ७ वामादेवी द्वारा वाद्य-ध्वनि का श्रवण ---- ६२
कडवक ८ वामादेवी द्वारा स्वप्नों की हयसेन से चर्चा ---- ६२
कडवक ९ स्वप्नों के फल पर प्रकाश ---- ६३
कडवक १० कनकप्रभ का गर्भावतरण---- ६३
कडवक ११ तीर्थंकर का जन्म ---- ६४
कडवक १२ इन्द्र द्वारा तीर्थंकर के जन्मोत्सव की तैयारी ---- ६४
कडवक १३ इन्द्र का वाराणसी के लिये प्रस्थान ---- ६५
कडवक १४ इन्द्र का वाराणसी में आगमन---- ६५
कडवक १५ तीर्थंकर को ले कर इन्द्र का पाण्डुकशिला पर आगमन---- ६६
कडवक १६ तीर्थंकर के जन्माभिषेक का प्रारंभ ---- ६६
कडवक १७ सौ इन्द्रों का उल्लेख---- ६७
कडवक १८ देवों द्वारा मनाये गये उत्सव का वर्णन ---- ६७
कडवक १९ जन्माभिषेक का वर्णन---- ६८
कडवक २० जन्माभिषेक के उत्सव का वर्णन---- ६८
कडवक २१ तीर्थंकर का कर्णच्छेदन तथा नामकरण---- ६९
कडवक २२ तीर्थंकर की स्तुति---- ६९
कडवक २३ तीर्थंकर को वामादेवी को सौंपकर इन्द्र का स्वर्ग में आगमन---- ७०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संधि ९

कडवक १ हयसेन कके राजभवन में जन्मोत्सव ---------- ७१
कडवक २ हयसेन की समृद्धि ---------- ७१
कडवक ३ तीर्थंकर द्वारा बाल्यकाल पार कर इकतीसवें वर्ष में प्रवेश ---------- ७१
कडवक ४ हयसेन की राजसभा में अनेक राजाओं की उपास्थिति ---------- ७२
कडवक ५ राजसभा का वर्णन ---------- ७३
कडवक ६ सभा में दूत का आगमन ---------- ७३
कडवक ७ दूत द्वारा कुशस्थल नगर के राजा शक्रवर्मा द्वारा दीक्षा लेने के समाचार... ---------- ७४
कडवक ८ समाचार के हयसेन को दुःख ---------- ७४
कडवक ९ दूत का शक्रवर्मा के स्थान पर.... ---------- ७५
कडवक १० संदेश से रविकीर्ति को क्रोध ---------- ७५
कडवक ११ यवनराज का रविकीर्ति के नगर पर आक्रमण ---------- ७६
कडवक १२ हयसेन की प्रतिज्ञा ---------- ७६
कडवक १३ हयसेन के वीरों में वीरता का संचार ---------- ७७
कडवक १४ हयसेन का युद्ध के लिये प्रस्थान ---------- ७७

संधि १०

कडवक १ पार्श्व का स्वतः युद्ध में जाने का प्रस्ताव ---------- ७८
कडवक २ पार्श्व को समझाने के लिये हयसेन का प्रयत्न ---------- ७८
कडवक ३ पार्श्व द्वारा अपने प्रस्ताव का समर्थन... ---------- ७९
कडवक ४ पार्श्व का युद्ध के लिये प्रस्थान ---------- ७९
कडवक ५ मार्ग में हुए शुभ शकुनों का वर्णन ---------- ८०
कडवक ६ भटों की शस्त्रसज्जा का वर्णन ---------- ८०
कडवक ७ सरोवर के समीप सेना का पड़ाव ---------- ८१
कडवक ८ सूर्यास्त का वर्णन ---------- ८१
कडवक ९ संध्या का वर्णन ---------- ८२
कडवक १० रात्रि का वर्णन ---------- ८२
कडवक ११ चन्द्रोदय का वर्णन ---------- ८३
कडवक १२ सूर्योदय का वर्णन ---------- ८३
कडवक १३ सेना का पुनः प्रस्थान ---------- ८४
कडवक १४ रविकीर्ति द्वारा पार्श्व का स्वागत ---------- ८४

संधि ११

कडवक १ रविकीर्ति की सेना की साज-सज्जा ---------- ८५
कडवक २ युद्ध में प्रगति ---------- ८५
कडवक ३ युद्ध की भीषणता का वर्णन ---------- ८६
कडवक ४ रविकीर्ति के साथी राजाओं द्वारा युद्ध प्रारंभ ---------- ८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडवक ५ यवनराज के उत्कृष्ट भटों द्वारा युद्ध-प्रारंभ ---------- ८८
कडवक ६ रविकीर्ति द्वारा स्वतः युद्धारंभ ---------- ८८
कडवक ७ रविकीर्ति का रण कौशल ---------- ८९
कडवक ८ यवनराज के पांच वीरों का रविकीर्ति से युद्ध ---------- ९०
कडवक ९ यवनराज के नौ पुत्रों का रविकीर्ति से युद्ध ---------- ९१
कडवक १० श्रीनिवास का रविकीर्ति से युद्ध ---------- ९२
कडवक ११ श्रीनिवास का पराभव ---------- ९३
कडवक १२ रविकीर्ति और पद्मनाथ का युद्ध ---------- ९४
कडवक १३ रविकीर्ति द्वारा पद्मनाथ का वध ---------- ९४

संधि १२

कडवक १ वनराज के गजब का रविकीर्ति पर आक्रमण ---------- ९६
कडवक २ रविकीर्ति द्वारा गजों का नाश ---------- ९६
कडवक ३ रविकीर्ति पर अन्य गजों का आक्रमण ---------- ९७
कडवक ४ रविकीर्ति के मंत्रियों का युद्ध करने के लिए पार्श्व से निवेदन ---------- ९७
कडवक ५ पार्श्व की अक्षौहिणी सेना का विवण ---------- ९८
कडवक ६ पार्श्व द्वारा रथारोहण ---------- ९९
कडवक ७ पार्श्व द्वारा शत्रु के गज-समूह का नाश ---------- ९९
कडवक ८ पार्श्व से युद्ध करने के लिए यवनराज की तैयारी ---------- १००
कडवक ९ पार्श्व और यवनराज का दिव्यास्त्रों से युद्ध ---------- १००
कडवक १० पार्श्व और यवनराज का बाणयुद्ध ---------- १०१
कडवक ११ पार्श्व पर यवनराज का शक्तिप्रहार शक्ति का नाश ---------- १०१
कडवक १२ यवनराज द्वारा शत्रुसेना का संहार ---------- १०२
कडवक १३ यवनराज का खड्ग से पार्श्व पर आक्रमण ---------- १०३
कडवक १४ यवनराज का भीषण संग्राम ---------- १०४
कडवक १५ पार्श्व द्वारा यवनराज का वंदी-ग्रहण ---------- १०५

संधि १३

कडवक १ यवनराज के भटों द्वारा आत्मसमर्पण ---------- १०६
कडवक २ पार्श्व का कुशस्थली में प्रवेश ---------- १०६
कडवक ३ पार्श्व द्वारा यवनराज की मुक्ति ---------- १०७
कडवक ४ वसंत का आगमन ---------- १०७
कडवक ५ पार्श्व के साथ अपनी कन्या का विवाह करने का निश्चय ---------- १०८
कडवक ६ विवाह की तिथि के विषय में ज्योतिषी का मत ---------- १०८
कडवक ७ ग्रहों और नक्षत्रों का विवाह पर परिणाम ---------- १०९
कडवक ८ भिन्न भिन्न ग्रहों का भिन्न गृहों में परिणाम ---------- १०९
कडवक ९ पार्श्व को नगर के बहार तापसों की उपस्थिति की सूचना ---------- ११०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडवक १० पार्श्व का तापसों को देखने के लिए प्रस्थान----------१११
कडवक ११ अग्नि में डालीजाने वाली लकड़ी.... ----------१११
कडवक १२ पार्श्व के मनें वैराग्य-भावना...---------- ११२
कडवक १३ लौकान्तिक देवों का पार्श्व के पास आगमन----------११२
कडवक १४ पार्श्व द्वारा दीक्षा ग्रहण ----------११३
कडवक १५ दीक्षा से रविकीर्ति को दुःख ----------११३
कडवक १६ प्रभावती का विलाप ----------११४
कडवक १७ दीक्षा समाचार से हयसेन को दुःख----------११४
कडवक १८ हयसेन के मन्त्रियों का उपदेश----------११५
कडवक १९ दीक्षा समाचार से वामादेवी को शोक----------११५
कडवक २० वामादेवी को मंत्रियों का उपदेश ----------११६
संधि १४
कडवक १ पार्श्व के तप और संयम का वर्णन----------११७
कडवक २ भीमाटवी का वर्णन ----------११७
कडवक ३ पार्श्व की ध्यानवस्था----------११८
कडवक ४ असुरेन्द्र के आकाशचारी विमान का वर्णन----------११८
कडवक ५ विमान के गति-हीन होने का वर्णन ----------११९
कडवक ६ विमान के गति-हीन होने के कारण..... ----------११९
कडवक ७ इन्द्र द्वारा स्थापित पार्श्व के अंगरक्षक...----------१२०
कडवक ८ उपसर्ग के दुष्परिणाम ----------१२०
कडवक ९ असुर द्वारा अंगरक्ष की भर्त्सना----------१२१
कडवक १० असुर का वज्र से आघात करने का निष्फल प्रयत्न ----------१२१
कडवक ११ असुर द्वारा उत्पन्न मेघों का वर्णन----------१२२
कडवक १२ असुर द्वारा उत्पन्न पवन की भीषणता----------१२२
कडवक १३ असुर द्वारा पार्श्व पर अनेक शस्त्रास्त्रों से प्रहार करने का प्रयत्न ----------१२३
कडवक १४ असुर द्वारा उत्पन्न की गयी अप्सराओं का वर्णन----------१२३
कडवक १५ असुर द्वारा उत्पन्न की गयी अग्नि की भयंकरता ----------१२४
कडवक १६ असुर द्वारा उत्पन्न की गयी समुद्र की भयानकता ----------१२५
कडवक १७ असुर द्वारा उत्पन्न की गयी हिंसक पशुओं की रौद्रता ----------१२५
कडवक १८ असुर द्वारा उत्पन्न की गयी भूतप्रेतों की बीभत्सता----------१२६
कडवक १९ असुर का वृष्टि करने का निश्चय ----------१२६
कडवक २० मेघों का वर्णन----------१२७
कडवक २१ मेघों की सतत वृद्धि----------१२७
कडवक २२ पृथिवी की जलमग्नता----------१२८
कडवक २३ जलौघ की सर्व व्यापकता ----------१२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडवक २४ धरणेन्द्र को उपसर्ग की सूचना की प्राप्ति....----------१२८
कडवक २५ नागराज द्वारा कमल का निर्माण तथा उस पर आरोहण----------१२९
कडवक २६ नागराज द्वारा पार्श्व की सेवा----------१३०
कडवक २७ असुर की नागराज को चेतावनी----------१३०
कडवक २८ असुर द्वारा नागराज पर अस्त्रों से प्रहार----------१३१
कडवक २९ असुर द्वारा नागराज को सेवा से विचलित करने का अन्य प्रयत्न----------१३१
कडवक ३० पार्श्वनाथ को केवलज्ञान की उत्पत्ति ----------१३१
संधि १५
कडवक १ केवलज्ञान की प्रशंसा ----------१३३
कडवक २ असुर के मन में भय का संचार----------१३३
कडवक ३ केवलज्ञान की उत्पत्ति की देवों को सूचना----------१३४
कडवक ४ इन्द्र तथा अन्य देवों का पार्श्व के समीप पहुँचने के लिये प्रस्थान----------१३४
कडवक ५ भीमाटवी को जलमग्न देखकर इन्द्र का रोष----------१३५
कडवक ६ इन्द्र द्वारा छोड़े गये वज्र से पीडित असुर का... ----------१३५
कडवक ७ इन्द्र द्वारा समवसरण की रचना----------१३६
कडवक ८ समवसरण में जिनेन्द्र के आसन----------१३६
कडवक ९ देवों द्वारा जिनेन्द्र की स्तुति----------१३७
कडवक १० देवों द्वारा जिनेन्द्र की वंदना ----------१३७
कडवक ११ इन्द्र की जिनेन्द्र से बोधि के लिये प्रार्थना----------१३७
कडवक १२ गजपुर के स्वामी का जिनेन्द्र से दीक्षाग्रहण...----------१३८
संधि १६
कडवक १ गणधर की लोक की उत्पत्ति पर प्रकाश....----------१३९
कडवक २ आकाश, लोकाकाश तथा मेरु की स्थिति पर प्रकाश----------१३९
कडवक ३ अधोलोक तथा उर्ध्वलोक का वर्णन----------१४०
कडवक ४ सात नरकभूमियों का वर्णन ----------१४०
कडवक ५ सोलह स्वर्गों का वर्णन----------१४०
कडवक ६ वैमानिक देवों की आयु का वर्णन----------१४१
कडवक ७ ज्योतिष्क देवों के प्रकार, उनकी आयु आदि----------१४१
कडवक ८ व्यंतर देवों के प्रकार, उनका निवास आदि----------१४२
कडवक ९ भवनवासी देवों के प्रकार, उनकी आयु ----------१४३
कडवक १० मध्यलोक, उसमें स्थित जम्बूद्वीप ----------१४३
कडवक ११ जम्बूद्वीप के सात क्षेत्रों और छह पर्वतों की स्थिति आदि ----------१४४
कडवक १२ पूर्व तथा अपर विदेह का वर्णन----------१४४
कडवक १३ पर्वोत पर ह्रदों की स्थिति.....----------१४५
कडवक १४ धातकी खंड, कालोदधि तथा पुष्करार्ध का वर्णन ----------१४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडवक १५ अढाई द्वीप में क्षेत्रों, पर्वतों आदि का विवरण ----------१४६
कडवक १६ द्वीप समुद्रों में सूर्यचन्द्र की संख्या ----------१४६
कडवक १७ तीन वातवलयों का निरूपण----------१४७
कडवक १८ कमठासुर द्वारा जिनेन्द्र से क्षमायाचना----------१४७
संधि १७
कडवक १ जिनेन्द्र का कुशस्थली में आगमन----------१४८
कडवक २ रविकीर्ति का जिनेन्द्र के पास आगमन ----------१४८
कडवक ३ कुलकरों तथा शलाकापुरुषों के विषय में.... ----------१४९
कडवक ४ काल के दो भेद...----------१४९
कडवक ५ सुषमा काल का वर्णन----------१४९
कडवक ६ सुषमा दुषमा काल का वर्णन....----------१५०
कडवक ७ दुषमा सुषमा में शलाका पुरुषों की उत्पत्ति----------१५०
कडवक ८ दुषमा काल का वर्णन ----------१५१
कडवक ९ दुषमा दुषमा काल का वर्णन ----------१५१
कडवक १० तृतीय काल के अन्त में ऋषभदेव की उत्पत्ति....----------१५२
कडवक ११ तीर्थंकरों की काया का प्रमाण----------१५२
कडवक १२ तीर्थंकरों के जन्म स्थान ----------१५३
कडवक १३ तीर्थंकरों का वर्ण ----------१५३
कडवक १४ प्रथम दस तीर्थंकरों की आयु का प्रमाण----------१५४
कडवक १५ श्रेयांस आदि चौदह तीर्थंकरों के तीर्थ की अवधि----------१५४
कडवक १६ प्रथम दस तीर्थंकरों के तीर्थ की अवधि---------- १५५
कडवक १७ श्रेयांस आदि आठ तीर्थंकरों के तीर्थ की अवधि----------१५६
कडवक १८ मल्लि आदि छह तीर्थंकरों के तीर्थ की अवधि----------१५६
कडवक १९ बारह चक्रवर्ती-उनके नामादि ----------१५६
कडवक २० नौ बलदेव-उनके नाम जन्म, आदि----------१५७
कडवक २१ नौ नारायण, उनके नाम आदि----------१५७
कडवक २२ नौ प्रति नारायणों के नाम ----------१५८
कडवक २३ रविकीर्ति द्वारा दीक्षा ग्रहण...----------१५८
कडवक २४ प्रबंजन द्वारा जिनेन्द्र की स्तुति----------१५९
संधि १८
कडवक १ चारों गतियों पर प्रकाश डालने के लिए...----------१६०
कडवक २ जो नरक जाते हैं उनके दुष्कृत्य ----------१६०
कडवक ३ तिर्यग्गति के जीवों का विवरण ----------१६१
कडवक ४ तिर्यग्गति के दुःख... ----------१६१
कडवक ५ मनुष्यगति - भोग भूमि और कर्मभूमि... ----------१६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडवक ६ भोग भूमि में उत्पन्न होने वालों के सत्कार्य ----------१६२
कडवक ७ अढाई द्वीप में १७० कर्म भूमियाँ ----------१६२
कडवक ८ दुष्कर्मों का फल भोगने के लिये कर्म भूमियों में उत्पत्ति ----------१६३
कडवक ९ सुरगति का वर्णन----------१६३
कडवक १० देवगति जिन कर्मों से प्राप्त होती है उनका विवरण ----------१६४
कडवक ११ प्रभंजन द्वारा दीक्षा ग्रहण....----------१६४
कडवक १२ लजिनेन्द्र का हयसेन को उपदेश ----------१६५
कडवक १३ नागराज का आगमन...----------१६५
कडवक १४ जिनेन्द्र के दूसरे और तीसरे जन्मों का संक्षिप्त विवरण----------१६६
कडवक १५ जिनेन्द्र के चौथे तथा पांचवें जन्मों का संक्षिप्त वर्णन ----------१६६
कडवक १६ जिनेन्द्र के छठवें तथा सातवें जन्मों का संक्षिप्त वर्णन ----------१६७
कडवक १७ जिनेन्द्र के आठवें जन्म का संक्षिप्त वर्णन ----------१६७
कडवक १८ जेन्द्र के नौवें तथा दसवें जन्मों का संक्षिप्त वर्णन ----------१६८
कडवक १९ हयसेन द्वारा दीक्षा ग्रहण । जिनेन्द्र का निर्वाण ----------१६८
कडवक २० ग्रन्थ परिचय ----------१६९
कडवक २१ ग्रन्थ के पठन-पाठन से लाभ----------१६९
कडवक २२ पद्मकीर्ति की गुरुपरम्परा । कवि की प्रशस्ति ----------१७०
पासणाहचरिउ (हिन्दी अनुवाद)---------- १-११४
शब्दकोष ---------- ११५-१९०
टिप्पणियाँ ---------- १९१-२४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org